I.G.N.O.U. Based

NEERAJ®

E.C.O.-9

मुद्रा, बैंकिंग व वित्तीय संस्थाएँ

(Money, Banking and Financial Institutions)

By: *Mukesh Magon*, M.B.A., P.G.D.B., M.I.R.

***Question Bank Cum Chapterwise Reference Book Including* Many Solved Question Papers**

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)
(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)

Sales Office:
1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi - 6
Ph.: 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501
E-mail: info@neerajignoubooks.com
Website: www.neerajignoubooks.com

MRP ₹ 160/-

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

Sales Office : **1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi-110 006**
E-mail: **info@neerajignoubooks.com**
Website: **www.neerajignoubooks.com**

Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only	*Typesetting by:* Competent Computers	*Printed at:* Novelty Printer

Notes:

1. *For the best & upto-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board /University.*
3. *The information and data etc. given in this Book are from the best of the data arranged by the Author, but for the complete and upto-date information and data etc. see the Govt. of India Publications/textbooks recommended by the Board/University.*
4. *Publisher is not responsible for any omission or error though every care has been taken while preparing, printing, composing and proof reading of the Book. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading etc. are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. If any reader is not satisfied, then he is requested not to buy this book.*
5. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
6. *If anyone finds any mistake or error in this Book, he is requested to inform the Publisher, so that the same could be rectified and he would be provided the rectified Book free of cost.*
7. *The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
8. *Question Paper and their answers given in this Book provide you just the approximate pattern of the actual paper and is prepared based on the memory only. However, the actual Question Paper might somewhat vary in its contents, distribution of marks and their level of difficulty.*
9. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS/NEERAJ IGNOU BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" on Websites, Web Portals, Online Shopping Sites, like Amazon, Flipkart, Ebay, Snapdeal, etc. is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ IGNOU BOOKS/NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
10. *Subject to Delhi Jurisdiction only.*

© Reserved with the Publishers only.

Spl. Note: *This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*

How to get Books by Post (V.P.P.)?

If you want to Buy NEERAJ IGNOU BOOKS by Post (V.P.P.), then please order your complete requirement at our Website ***www.neerajignoubooks.com****. You may also avail the 'Special Discount Offers' prevailing at that Particular Time (Time of Your Order).*

To have a look at the Details of the Course, Name of the Books, Printed Price & the Cover Pages (Titles) of our NEERAJ IGNOU BOOKS You may Visit/Surf our website ***www.neerajignoubooks.com.***

No Need To Pay In Advance, the Books Shall be Sent to you Through V.P.P. Post Parcel. All The Payment including the Price of the Books & the Postal Charges etc. are to be Paid to the Postman or to your Post Office at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us by Charging some extra M.O. Charges.

We usually dispatch the books nearly within 4-5 days after we receive your order and it takes Nearly 5 days in the postal service to reach your Destination (In total it take atleast 10 days).

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)

1507, 1st Floor, NAI SARAK, DELHI - 110006

Ph. 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501

E-mail: **info@neerajignoubooks.com** *Website:* **www.neerajignoubooks.com**

CONTENTS

मुद्रा, बैंकिंग व वित्तीय संस्थाएँ
(Money, Banking and Financial Institutions)

Question Bank – (Previous Year Solved Question Papers)

Question Paper—June, 2019 (Solved)	1-2
Question Paper—June, 2018 (Solved)	1
Question Paper—June, 2017 (Solved)	1
Question Paper—June, 2016 (Solved)	1
Question Paper—June, 2015 (Solved)	1-3
Question Paper—June, 2014 (Solved)	1
Question Paper—June, 2013 (Solved)	1
Question Paper—June, 2012 (Solved)	1
Question Paper—June, 2011 (Solved)	1
Sample Question Paper—1 (Solved)	1-7
Sample Question Paper—2 (Solved)	1-7
Sample Question Paper— 3 (Solved)	1-6

S.No. ***Chapterwise Reference Book*** *Page*

मुद्रा सिद्धांत

1.	मुद्रा : प्रकृति, कार्य और महत्त्व	1
2.	मुद्रा की माँग और पूर्ति	7
3.	मुद्रा और कीमतें	13
4.	मुद्रास्फीति	21

बैंकिंग सिद्धांत और व्यवहार

5.	व्यापारिक बैंकिंग	27
6.	भारत में व्यापारिक बैंकिंग	35

S.No.	Chapter	Page
7.	केन्द्रीय बैंकिंग	41
8.	भारतीय रिजर्व बैंक	47
9.	भारतीय मुद्रा बाजार	54
	भारत में गैर-बैंकिंग (बैंकेतर) वित्तीय संस्थाएँ	
10.	गैर-बैंकिंग (बैंककेतर) वित्तीय मध्यस्थता : सिंहावलोकन	59
11.	सावधिक ऋण देने वाली वित्तीय संस्थाएँ–अखिल भारतीय स्तर	65
12.	मुद्रा और कीमतें	73
13.	भारत में कृषि वित्त	77
	अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रणाली	
14.	अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रणाली : एक परिचय	84
15.	अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष	90
16.	विश्व बैंक	95

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER
(June – 2019)

(Solved)

मुद्रा, बैंकिंग व वित्तीय संस्थाएँ

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

(कुल का : 70%)

नोट : *इस प्रश्न पत्र में* ***क, ख*** *तथा* ***ग*** *खण्ड हैं। प्रत्येक खण्ड में आवश्यक निर्देश दिए गए हैं।*

खण्ड–क

नोट : इस खण्ड में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1. 'मुद्रास्फीति' की परिभाषा दीजिए। अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों पर पड़ने वाले मुद्रास्फीति के प्रभावों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ 21, प्रश्न 1, पृष्ठ 24, प्रश्न 4

प्रश्न 2. 'मुद्रा बाजार' की परिभाषा दीजिए। भारतीय मुद्रा बाजार की मुख्य विशेषताओं की व्याख्या कीजिए तथा इसकी मुख्य कमियों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ 54, प्रश्न 1, पृष्ठ 56, प्रश्न 5 पृष्ठ-57, प्रश्न 6

प्रश्न 3. भारत में कृषि साख के मुख्य सोतों का विवेचन कीजिए। यह भी स्पष्ट कीजिए कि राष्ट्रीयकृत बैंक किस हद तक किसानों की साख की आवश्यकताओं को पूरा कर पाए हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ 79, प्रश्न 4

प्रश्न 4. अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) के विभिन्न उद्देश्य क्या हैं? अंतर्राष्ट्रीय तरलता (Liquidity) की समस्या को हल करने में अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की भूमिका की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-15, पृष्ठ 90, प्रश्न 1, पृष्ठ 93, प्रश्न 6

खण्ड–ख

नोट : इस खण्ड में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 5. मुद्रा की मांग से क्या तात्पर्य है? मुद्रा को अपने पास रखने के विभिन्न प्रयोजनों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ 8, प्रश्न 2

प्रश्न 6. 'व्यापारिक बैंक' से क्या तात्पर्य है? इसके प्राथमिक कार्यों का (Functions) उल्लेख कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ 29, प्रश्न 5, पृष्ठ 30, प्रश्न 6

प्रश्न 7. विकास बैंक क्या है? इसके मुख्य कार्यों का विवेचन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ 65, प्रश्न 1

प्रश्न 8. 'विदेशी विनिमय बाजार' की परिभाषा दीजिए। विदेशी विनिमय बाजार के संघटन (Composition) की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–विदेशी विनिमय बाजार एक ऐसा बाजार है, जहाँ पर एक देश की प्रतिभूतियों का लेन-देन अन्य देशों के साथ किया जाता है। विदेशी विनिमय बाजार में मुद्राओं का लेन-देन भी किया जाता है। किसी भी देश के लिए विदेशी विनिमय बाजार का बहुत महत्त्व होता है, क्योंकि इन बाजारों में वित्तीय लेन-देन किये जाते हैं। कोई अन्य देश किसी देश के विनिमय बाजार में आकर प्रतिभूतियों का लेन-देन कर सकता है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि जिन बाजारों में प्रतिभूतियों तथा मुद्रा का लेन-देन व विनिमय किया जाता है, उसे विदेशी विनिमय बाजार कहा जाता है।

इसे भी देखें–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-86, प्रश्न 4

खण्ड–ग

प्रश्न 9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियां लिखिए–

(क) मुद्रा का संचलन वेग (Velocity of Money)

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ 13, प्रश्न 2

(ख) भारत में केंद्रीय बैंक की बैंक दर नीति

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ 44, 'बैंक दर नीति की कार्यप्रणाली'

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

(ग) भारत में सहकारी बैंकों की समस्याएं

उत्तर–वर्तमान में सहकारी बैंकिंग व्यवस्था के द्वारा कुल कृषि ऋणों का लगभग आधे भाग की पूर्ति की जा रही है। मार्च, 2000 में 92,000 कृषि साख समितियाँ, 367 केन्द्रीय सहकारी बैंक एवं 29 राज्यीय सहकारी बैंक देश में कार्यरत थे और इन सभी सहकारी संस्थाओं ने वर्ष 1999-2000 में कुल 99,480 करोड रु. के ऋण ग्रामीण क्षेत्रों में प्रदान किए, किन्तु सहकारी बैंकों एवं समितियों में अनेक कामजोरियाँ भी पैदा हो गई है जिसके कारण यह आन्दोलन अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सफल नहीं रहा है।

ये कामजोरियाँ निम्न प्रकार है:

(i) भारत में सहकारी बैंकों एवं समितियों के कार्यकलाप सहकारिता के सिद्धांतों पर आधारित न होकर सरकारी विभागों की तरह संचालित होते हैं। यही कारण है कि किसानों ने सहकारी बैंकों एवं साख समितियों को आमतौर पर ऋण देने वाली सरकारी संस्था समझ लिया है।

सहकारी बैंकों एवं सहकारी समितियों के अधिकारी एवं कर्मचारी सहकारिता के आदर्शों के साथ-साथ व्यापारिक बैंकों की प्रभावी संचालन तकनीकी से भी अनभिज्ञ हैं। उन्हें न तो उचित प्रशिक्षण मिला है और न ही वे ग्रामीणों की वित्तीय आवश्यकताओं से परिचित है।

(ii) सहकारी बैंकों एवं साख समितियों में वित्त की कमी एक मूल समस्या बनी हुई है। प्रारम्भ में यह सोचा जाता था कि सदस्य अपनी बचतों को इन संस्थाओं में जमा करके कार्यकारी पूंजी (Working Capital) में बडा अंशदान में आधा प्रतिशत अपनी जमा राशियों पर देने का अधिकार है, तथापि ये संस्थाएँ जनता से प्रत्याशित जमा आकर्षित नहीं कर पाई।

(iii) रिजर्व बैंक राज्यीय सहकारी बैंकों को रियायती दर पर ऋण उपलब्ध कराने के लिए सदैव तत्पर रहता है। इसी प्रकार नाबार्ड द्वारा भी इन्हें पर्याप्त वित्तीय सुविधाएं उपलब्ध हैं, किन्तु राज्यीय सहकारी बैंक एवं केन्द्रीय सहकारी बैंक इन सुविधाओं का समुचित लाभ नहीं उठाते।

(iv) सहकारी बैंक कृषकों को केवल कृषि कार्यों के लिये ऋण प्रदान करते हैं, जबकि कृषकों को कृषि कार्यों के अलावा अन्य कार्यों के लिए भी ऋणों कि आवश्यकता होती है। अत: सहकारी बैंकों और समितियों का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों की समग्र वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति करना होना चाहिए।

(v) सहकारी बैंकों एवं साख समितियों को न केवल व्यापारिक बैंकों एवं क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों से प्रतिस्पर्धा करना पडती है, वरन देसी बैंकर्स एवं साहूकारों से भी इन्हें प्रतियोगिता करनी होती है, किन्तु सहकारी संस्थाएँ अपनी कमजोर वित्तीय स्थिति के कारण इस प्रतिस्पर्धा का सामना नहीं कर पातीं।

(vi) सहकारी संस्थाओं पर अनियमितताओं पक्षपात एवं भाई-भतीजावाद के आरोप भी लगाए जाते हैं। प्राय: कहा जाता है कि ऋण एवं अन्य सुविधाएँ जरूरतमन्द किसानों की अपेक्षा धनी किसानों और पदाधिकरियों के सम्बन्धियों तथा मित्रों को ही उपलब्ध होती है।

ऋणों की वसूली में भी यही स्थिति रहती है जिसके कारण ऋणों की समुचित वसूली नहीं हो पाती। आशय यह है कि सहकारी बैंकों एवं समितियों का प्रबन्ध योग्य, कुशल एवं समर्पित अधिकारियों के हाथों में नहीं है।

(vii) सहकारिता के क्षेत्र में एक कमजोरी दृष्टिकोण की भी है। सरकार ने इस आन्दोलन के एक सरकारी विभाग बना दिया है जिससे इसमें कमजोर नियमवादिता और अदूरदर्शिता की वे सभी बुराइयां आ गई है जो सरकारी विभागों में आम तौर पर पाई जाती है। फलत: सहकारी बैंकों में भी अफसरशाही का बोलबाला है।

(घ) विश्व बैंक के कार्य

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-16, पृष्ठ 96, प्रश्न 2

■■

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

मुद्रा, बैंकिंग और वित्तीय संस्थाएँ

मुद्रा सिद्धांत

मुद्रा : प्रकृति, कार्य और महत्त्व

1

परिचय

आधुनिक अर्थव्यवस्था एक मौद्रिक अर्थव्यवस्था है, जिसमें मुद्रा का प्रयोग जीवन के सभी क्षेत्रों में व्यापक व निर्विघ्न रूप से किया जाता है। मुद्रा कोई भी वह वस्तु हो सकती है, जो आम सहमति से चुनी गई हो और जो भुगतान के साधन के रूप में सामान्यतया स्वीकार्य हो। मुद्रा का महत्त्व इसके द्वारा किए जाने वाले कार्यों से ज्ञात होता है।

प्रस्तुत अध्याय में मुद्रा की प्रकृति, इसके उपयोग एवं इसके महत्त्व के बारे में बताया गया है।

बोध व स्वपरख प्रश्न

प्रश्न 1. मुद्रा-विनिमय प्रणाली की असुविधाएँ संक्षेप में बताइए।

अथवा

वस्तु-विनिमय प्रणाली की प्रमुख समस्याएँ क्या हैं?

उत्तर–वस्तुओं और सेवाओं के बदले में वस्तुओं और सेवाओं के आदान-प्रदान की प्रक्रिया वस्तु-विनिमय प्रणाली कहलाती है।

मुद्रा के चलन से पहले विनिमय कार्य वस्तु-विनिमय प्रणाली के द्वारा संपन्न किया जाता था। इस प्रणाली में व्यक्तियों के पास जो वस्तुएँ व सेवाएँ होती थीं, उनका विनिमय दूसरों के पास उपलब्ध वस्तुओं व सेवाओं से किया जाता था। उदाहरण के लिए, एक कृषक अपने अतिरिक्त अनाज का विनिमय (जो उसकी अपनी आवश्यकता से अधिक होता था) बुनकर के पास अतिरिक्त कपड़े से करता था। यह कार्य दोनों की आवश्यकताओं को पूर्ण करने में सहायक होता था।

वस्तु विनिमय प्रणाली की समस्याएँ–समय के साथ-साथ जैसे-जैसे मानव की आवश्यकताएँ बढ़ने लगीं; वैसे-वैसे वस्तु-विनिमय प्रणाली के प्रयोग से विभिन्न समस्याएँ उत्पन्न होने लगीं। इसलिए एक ऐसे विनिमय के माध्यम की आवश्यकता अनुभव की जाने लगी जो सामान्य रूप से स्वीकार्य हो। इसी के परिणामस्वरूप मुद्रा का आविष्कार व विकास हुआ।

लोगों को वस्तु-विनिमय प्रणाली में निम्नलिखित प्रमुख समस्याओं का सामना करना पड़ता था–

1. धन संचय में कठिनाई–मुद्रा का प्रचलन न होने पर बचत करना व धन का निर्माण करना अत्यन्त कठिन है, क्योंकि बहुत-सी वस्तुएँ टिकाऊ नहीं होतीं तथा सभी प्रकार की सेवाएँ समय के साथ-साथ समाप्त हो जाती हैं, इसलिए भविष्य के लिए इन्हें संचित नहीं किया जा सकता। भविष्य के आकस्मिक व्यय के लिए लोग प्रावधान के रूप में किसी वस्तु का संचय करने के विषय में सोच भी नहीं सकते थे, क्योंकि गेहूँ, पशुओं की चमड़ी आदि के रूप में संचित किया गया धन ज्यादा दिन नहीं चल सकता। मुद्रा, क्योंकि टिकाऊ है, अतः यह बचत व धन संचय करने का सुविधाजनक तरीका है।

2. मूल्य की एक सामान्य माप की समस्या–मुद्रा न होने पर, प्रत्येक वस्तु का मूल्य शेष सभी वस्तुओं के रूप में पता लगाना

www.neerajbooks.com

होता था। उदाहरणार्थ, एक मीटर कपड़े के लिए कितना गेहूँ अथवा दूध अथवा नमक अथवा चावल दिया जाए? समाज में यदि 10 वस्तुएँ थीं, तो लोगों को 45 मूल्य निर्धारित करने होते थे तथा ये सभी याद रखने होते थे। यदि वस्तुओं की संख्या 100 हो तो ऐसे मूल्य 4950 होंगे। यदि वस्तुएँ n हों, तो वस्तु-विनिमय प्रणाली में कितने मूल्य निर्धारित करने होंगे, उसका सूत्र इस प्रकार है–

$$\frac{n(n-1)}{2}$$

किन्तु मुद्रा प्रचलन में प्रत्येक वस्तु का मूल्य केवल मुद्रा में ही व्यक्त करना होता है। इसलिए यदि 100 वस्तुएँ हों तो मौद्रिक अर्थव्यवस्था में व्यक्तियों को केवल 100 मूल्य जानने होंगे।

3. वस्तुओं के उप-विभाजन के कारण क्षति–बहुत-सी वस्तुएँ ऐसी भी होती हैं जिनका उप-विभाजन करने पर उनके मूल्य की अंशतः अथवा कभी-कभी पूर्णतया हानि हो जाएगी। उदाहरणतः एक सोफा या एक फ्रिज या एक अल्मारी का अंशों में उप-विभाजन नहीं किया जा सकता, क्योंकि ऐसा करने पर उनका मूल्य समाप्त हो जाएगा। अब यदि एक व्यक्ति अपने फ्रिज का पाँच अथवा छः वस्तुओं से विनिमय करना चाहता है, तो किसी एक ही व्यक्ति ये सारी वस्तुएँ प्राप्त करना आसान नहीं होगा। इसलिए उसे अपने फ्रिज को पाँच या छः भागों में उपविभाजित करना होगा, किन्तु ऐसा करने से फ्रिज का मूल्य समाप्त हो जाएगा। इसके दूसरी ओर यदि विनिमय के माध्यम के रूप में मुद्रा प्रयोग की जाती है, तो ऐसी कोई समस्या पैदा नहीं होगी, क्योंकि मुद्रा पूरी तरह से विभाज्य होती है।

4. आवश्यकताओं के दोहरे संयोग का अभाव–वस्तु विनिमय हेतु आवश्यकताओं के दोहरे संयोग का होना आवश्यक है। उदाहरणतः यदि किसी आदमी के पास एक गाय है और वह इसका विनिमय गेहूँ से करना चाहता है, तो उसे किसी ऐसे आदमी को ढूँढना होगा जिसके पास देने के लिए अतिरिक्त गेहूँ हो और इसके साथ-साथ उसे उस गाय की आवश्यकता हो जो अन्य व्यक्ति देना चाहता है। आवश्यकताएँ जब सरल थीं तथा वस्तुओं की संख्या सीमित होती थी, तो ऐसे संयोगों का होना सरल था। किन्तु जैसे-जैसे वस्तुओं की संख्या बढ़ती गयीं, आवश्यकताओं के ऐसे संयोग कठिन होते गये तथा इन्हें ज्ञात करने में समय भी बहुत लगने लगा। मुद्रा के चलन से यह कठिनाई खत्म हो गयी क्योंकि अब कोई भी व्यक्ति अपना माल बेचकर मुद्रा प्राप्त कर सकता है तथा इस मुद्रा की सहायता से वह अपनी इच्छानुसार वस्तुएँ व सेवाएँ क्रय कर सकता है।

प्रश्न 2. मुद्रा के विकास का वर्णन कीजिए।

अथवा

मुद्रा के विकास तथा कार्यों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–भारत में वर्तमान मुद्रा में सिक्के, कागजी नोट तथा निक्षेप मुद्रा सम्मिलित की जाती है। किन्तु मुद्रा को इस रूप में आने में सैकड़ों वर्ष का समय लग गया। सभ्यता के आरंभ में मुद्रा ने वस्तु मुद्रा का रूप ले लिया जैसे कि भेड़, गाय, चावल, गेहूँ, तम्बाकू, बाघ के नाखून, हाथी दाँत आदि।

किन्तु समय के साथ-साथ इन वस्तुओं का टिकाऊ और मानक रूप न होने के कारण इनको मुद्रा के रूप में प्रयोग करना छोड़ दिया गया। वर्तमान मुद्रा भी तीन चरणों से होकर गुजरी है–*(i)* धातु मुद्रा, *(ii)* प्रतिनिधि पत्र मुद्रा, तथा *(ii)* साख मुद्रा। वर्तमान अपरिवर्तनीय कागजी नोट और अन्य साख प्रपत्रों का विधिमान्य मुद्रा हेतु स्थानापन्न (substitute) के रूप में चलन अभी हाल में ही हुआ है।

(i) **धातु मुद्रा**–आर्थिक संवृद्धि तथा सभ्यता की प्रगति के साथ-साथ समाज में सोना, चाँदी व ताँबे आदि से निर्मित सिक्कों का प्रयोग मुद्रा के रूप में हुआ। ये सिक्के दो प्रकार के थे–

1. मानक अथवा पूर्ण मूल्य सिक्के। इन सिक्कों पर अंकित मूल्य तथा इनमें प्रयुक्त धातु का मूल्य एक समान था और,
2. प्रतीक सिक्के, वे सिक्के थे जिन पर अंकित मूल्य इनमें प्रयुक्त धातु के मूल्य से ज्यादा था।

(ii) **प्रतिनिधि पत्र मुद्रा**–आगे चलकर धातु के सिक्कों का स्थान पत्र मुद्रा ने ले लिया। ऐसा दो मुख्य कारणों से किया गया था–

1. मूल्यवान धातुओं के प्रयोग में मितव्ययिता के लिए और
2. सिक्कों की अपेक्षा कागज का संचय तथा उसे एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने में अधिक सुविधा होती है। पत्र मुद्रा के प्रति लोगों का विश्वास उत्पन्न करने के लिए, आरंभ में पत्र मुद्रा को प्रतिनिधि नोटों का रूप दिया गया। इसलिए ये नोट धात्विक मुद्रा के केवल प्रतिस्थापन मात्र थे, अर्थात् धारक द्वारा माँग करने पर ये सोने अथवा चाँदी में परिवर्तनीय थे। उत्पादन में वृद्धि, जनसंख्या में वृद्धि व अर्थव्यवस्था के मौद्रिक क्षेत्र में वृद्धि के कारण लेन-देनों में पत्र मुद्रा के प्रयोग में वृद्धि से इस प्रकार की परिवर्तनीयता लगभग असंभव हो गयी। इसलिए वर्तमान कागजी नोट अब चाँदी अथवा सोने के सिक्कों में परिवर्तनीय नहीं हैं और इसलिए यह अधिदिष्ट मुद्रा कहलाती है। वर्तमान सामान्य मुद्रा का एक बड़ा अंश इस अपरिवर्तनीय पत्र मुद्रा में होता है।

(iii) **साख मुद्रा**–साख मुद्रा का प्रचलन अभी हाल में ही आरंभ हुआ है। सामान्यतः लोग अपनी रोकड़ का एक भाग बैंक में रखते हैं तथा इसे जब चाहे निकाल सकते हैं अथवा चेक द्वारा किसी अन्य व्यक्ति को हस्तांतरित

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

कर सकते हैं। चेक व ड्राफ्ट मूल्य के हस्तांतरण के सबसे सुविधाजनक रूप हैं, इसलिए ये बैंक मुद्रा के रूप में स्वीकृत हो गए, यद्यपि ये वास्तविक मुद्रा नहीं हैं, क्योंकि इसे स्वीकार करना इच्छा पर निर्भर करता है। फिर भी, ये मुद्रा का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य करते हैं अर्थात् भुगतान के माध्यम का कार्य करते हैं।

प्रश्न 3. मुद्रा क्या है? मुद्रा और मुद्रावत् में भेद कीजिए।

उत्तर–मुद्रा की कुछ प्रमुख परिभाषाएँ इस प्रकार हैं–

क्राउथर–"कोई भी वस्तु जो सामान्य रूप से विनिमय के माध्यम के रूप में स्वीकार की जाती है तथा मूल्य के माप व संचय का काम करती है, मुद्रा है।"

अल्फ्रेड मार्शल–"मुद्रा में वे सभी वस्तुएँ सम्मिलित की जाती हैं, जो किसी समय या स्थान पर, बिना संदेह या विशेष जाँच के वस्तुओं व सेवाओं को क्रय करने तथा व्ययों का भुगतान करने के साधन के रूप में सामान्य रूप से प्रचलित होती हैं।"

डी.एच. रॉबर्ट्सन–"कोई भी वह वस्तु मुद्रा है, जो व्यापक रूप से वस्तुओं के भुगतान के लिए अथवा अन्य प्रकार के व्यापारिक दायित्वों के भुगतान के लिए स्वीकार्य हो।"

वाकर–"मुद्रा वह है जो मुद्रा का कार्य करे।"

जे.एम.कीन्स–"मुद्रा वह है जिसे देकर ऋण अनुबंधों और मूल्य-अनुबंधों को उन्मुक्त किया जाता है और जिसके रूप में सामान्य क्रय शक्ति संचित की जाती है।"

ए.सी. पीगू–"किसी भी वस्तु को मुद्रा के रूप में वर्गीकृत होने के लिए वह विनिमय के प्रपत्र के रूप में भली प्रकार तथा व्यापक रूप से स्वीकार की जानी चाहिए।"

जी.डी.एच. कोल–"मुद्रा कोई भी वह वस्तु है जो भुगतान के साधन के रूप में नियमित तथा व्यापक रूप से स्वीकार की जानी चाहिए।"

मुद्रा की विशेषताएँ–मुद्रा की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

1. मुद्रा कोई भी वह वस्तु हो सकती है (एक कागज का पुर्जा भी) जो आम सहमति से विनिमय के माध्यम अथवा क्रय शक्ति के हस्तांतरण के साधन के रूप में चुनी गयी हो।
2. यह वस्तुओं व सेवाओं हेतु भुगतान के रूप में है तथा भविष्य के भुगतानों सहित सभी लेन-देनों के निपटारे में व्यापक पैमाने पर स्वीकार्य है।
3. यह उस व्यक्ति की साख के संदर्भ के बिना स्वीकृत होनी चाहिए, जो इसे भुगतान के रूप में प्रस्तुत करता है। इसका कारण है कि मुद्रा में तरलता अर्थात् सामान्य क्रय शक्ति है, जिसे वस्तुओं और सेवाओं के विनिमय में अन्यों को दिया जा सकता है।
4. मुद्रा, मात्रा और गुण की किसी विशेष जाँच के बिना भी, सबके द्वारा साधारण तौर पर प्राप्त की जाती है।

मुद्रा तथा मुद्रावत् में अन्तर–कुछ ऐसी परिसम्पत्तियाँ हैं जो बहुत तरल हैं, किन्तु ये मुद्रा की तरह पूर्ण रूप से तरल नहीं हैं। इन परिसम्पत्तियों को तुरंत और मूल्य में हानि के बिना इन्हें सरलतापूर्वक मुद्रा में परिवर्तित किया जा सकता है, अतः इन्हें मुद्रावत् कहा जाता है। मुद्रावत् के उदाहरण हैं–विनिमय पत्र, बॉण्ड, बचत प्रमाणपत्र, सरकारी हुण्डियाँ और ऋणपत्र आदि। ऐसी मुद्रावत् परिसम्पत्तियाँ मुद्रा पर दावे हैं अर्थात् इनका वस्तुओं के क्रय के लिये प्रयोग करने के लिए पहले इन्हें वास्तविक मुद्रा में परिवर्तित करना होता है। इसलिए मुद्रावत् परिसम्पत्तियों का महत्त्व इसमें है कि कितनी सरलतापूर्वक इन्हें, बिना समय अथवा मूल्य की हानि हुए, बाजार में बेचा जा सकता है। फिर भी मुद्रा और मुद्रावत् एक बात पर एक-दूसरे से मिलते हैं कि ये दोनों ही दावे हैं। मुद्रा नोटों को जारी करने वाले देश के केन्द्रीय बैंक अथवा सरकार पर एक दावा है, जबकि बैंक मुद्रा उन बैंकों पर एक दावा है जो सार्वजनिक निक्षेप के रूप में मुद्रा अपने पास रखते हैं। इसी प्रकार मुद्रावत् इसे जारी करने वाले पर एक दावा है। एक विनिमय पत्र उस पक्षकार पर एक दावा है, जो विनिमय पत्र में अंकित राशि को एक निर्दिष्ट अवधि (यथा 91 दिन) की समाप्ति पर देने को सहमत हुआ है। इसी प्रकार एक बॉण्ड उस सरकार पर एक दावा है, जिसने इसे जारी किया है।

प्रश्न 4. मुद्रा की प्रकृति तथा कार्यों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–मुद्रा की प्रकृति–मुद्रा मात्र एक साधन है, साध्य नहीं है। इसके स्वयं के लिए इसकी माँग नहीं की जाती, वरन् इसलिये की जाती है कि यह हमारी आवश्यकताओं को संतुष्ट करने के लिए वस्तुओं व सेवाओं को क्रय करने में सहायता करती है। प्रत्यक्ष रूप से मानवीय आवश्यकताओं को मुद्रा संतुष्ट नहीं कर सकती, किन्तु वस्तुओं व सेवाओं के उत्पादन व विनिमय में सहायता करती है। इसका महत्त्व वस्तुओं व सेवाओं को क्रय करने और व्यावसायिक दायित्वों को पूर्ण करने की इसकी योग्यता से है। मुद्रा पूँजी को गतिशीलता देती है तथा यह श्रम विभाजन और विशिष्टीकरण में भी सहायक होती है। यह बड़े पैमाने पर उत्पादन को संभव बनाती है।

मुद्रा के कार्य–मुद्रा के प्रमुख कार्यों को निम्नलिखित तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है–

1. प्रमुख कार्य–मुद्रा के प्रमुख कार्य हैं–
- *(i)* विनिमय के माध्यम के रूप में, और
- *(ii)* मूल्य के मापक के रूप में।

2. गौण कार्य–मुद्रा के अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य (जो प्रमुख कार्यों से जनित हैं) इस प्रकार हैं–
- *(i)* स्थगित भुगतानों का मान,
- *(ii)* मूल्य का संचय, और
- *(iii)* मूल्य का हस्तांतरण

3. आकस्मिक कार्य–आधुनिक अर्थव्यवस्था में मुद्रा के कुछ आकस्मिक कार्य निम्नवत् हैं–

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

(i) राष्ट्रीय आय के वितरण में सहायक
(ii) साख प्रणाली का आधार
(iii) उपयोगिता व लाभों को अधिकतम करने में सहायक
(iv) धन को तरलता प्रदान करना।

उपरोक्त वर्णित कार्यों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है–

1. प्रमुख कार्य–

***(i)* विनिमय के माध्यम के रूप में**–मुद्रा का यह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तथा अद्वितीय कार्य है तथा यह कार्य ही इसे मुद्रावत् परिसम्पत्तियों से पृथक् करता है। सामान्य विनिमय के माध्यम के रूप में मुद्रा के प्रयोग ने वस्तुओं तथा सेवाओं के क्रय-विक्रय को अत्यधिक सुविधाजनक बना दिया है। मुद्रा के अभाव में वस्तु-विनिमय प्रणाली से ही विनिमय हो सकता था। मुद्रा के विनिमय के माध्यम के रूप में प्रयोग से हम वस्तु-विनिमय की अधिकतर समस्याओं से बच जाते हैं। हालाँकि मुद्रा का प्रयोग विनिमय को दो भागों में विभाजित कर देता है विक्रय और क्रय, किन्तु इससे समय और शक्ति की कोई क्षति नहीं होती।

***(ii)* मूल्य के मापक के रूप में**–अन्य सभी वस्तुओं और सेवाओं के मूल्यों को उनकी मौद्रिक कीमतों में मापने के लिए मुद्रा एक मापदण्ड की तरह कार्य करती है। मुद्रा की अनुपस्थिति में एक वस्तु का मूल्य केवल अन्य वस्तुओं व सेवाओं में व्यक्त किया जा सकता था। बाजार में यदि 100 वस्तुएँ हों, तो वस्तु-विनिमय प्रणाली के तहत प्रत्येक वस्तु का मूल्य शेष 99 वस्तुओं में व्यक्त करना पड़ेगा। इस प्रकार कुल 4950 मूल्य होंगे। दूसरी ओर, मुद्रा को यदि मूल्य के माप के रूप में प्रयोग किया जाता है तो प्रत्येक वस्तु का मूल्य केवल मुद्रा में ही मापने की आवश्यकता होगी तथा इस तरह 100 वस्तुओं के लिए केवल 100 मूल्य होंगे।

राष्ट्रीय आय के आकलन में भी मौद्रिक कीमतों का प्रयोग सहायता करता है, क्योंकि विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ तथा सेवाएँ विभिन्न भौतिक इकाइयों में मापी जाती हैं। अत: राष्ट्रीय आय का आकलन करने के लिए इन्हें जोड़ा नहीं जा सकता; किन्तु इनके मौद्रिक मूल्य जोड़े जा सकते हैं। मुद्रा के प्रयोग से वस्तुओं के मूल्यों की विभिन्न समयों पर तथा विभिन्न क्षेत्रों में तुलना करना भी संभव है।

2. गौण कार्य–

***(i)* स्थगित भुगतानों का मान**–मुद्रा वस्तुओं व सेवाओं के न केवल वर्तमान लेन-देनों को, वरन उनके उधार लेन-देनों को भी सरल बनाती है। वर्तमान वस्तुओं का जब भविष्य के भुगतानों से विनिमय होता है, तो इससे उधार लेन-देन सरल हो जाता है। वर्तमान जगत में अधिकतर स्थगित भुगतान अनुबंध केवल मुद्रा में किये जाते हैं।

***(ii)* मूल्य का संचय**–अपनी वर्तमान आय के एक भाग को लोग भविष्य में व्यय के लिये मुद्रा के रूप में रख सकते हैं। मुद्रा एक सर्वमान्य क्रय शक्ति का प्रतीक है। साथ-साथ यह एक पूर्ण रूप से तरल परिसम्पत्ति है। इसके अलावा यह टिकाऊ है और अपने मूल्य में अधिक स्थिर है। इसे सरलता से जोड़ा जा सकता है, क्योंकि यह सापेक्षिक रूप से कम भार की है और कम स्थान घेरती है इसलिए धन को मुद्रा के रूप में संचित करना सुविधापूर्ण है। मुद्रा को कभी भी किसी भी परिसम्पत्ति में बदला जा सकता है। इस तरह मुद्रा वर्तमान को भविष्य से जोड़ती है, क्योंकि आज संचित की गयी मुद्रा का अर्थ क्रय शक्ति को वर्तमान से भविष्य में विवर्तित करना है।

***(iii)* मूल्य का हस्तांतरण**–मुद्रा विनिमय का सर्वाधिक सुविधाजनक रूप है, जिसमें मूल्य को एक व्यक्ति से दूसरे को तथा एक स्थान से दूसरे स्थान पर हस्तांतरित/अंतरित किया जा सकता है, क्योंकि मुद्रा को सभी लोग तुरंत स्वीकार कर लेते हैं तथा अन्य वस्तुओं की तुलना में इसका भार कम तथा मूल्य अधिक होने से इसे स्थानांतरित करने की लागत भी बहुत कम है।

3. आकस्मिक कार्य–

***(i)* राष्ट्रीय आय के वितरण में सहायक**–मुद्रा राष्ट्रीय उत्पाद को उन व्यक्तियों में वितरित करने में मदद करती है, जिन्होंने इसके उत्पादन में सहयोग दिया है। वर्तमान समाज में लोग वस्तुओं का उत्पादन करने के लिए परस्पर श्रमिकों, भू-स्वामियों, पूँजी के स्वामियों आदि के रूप में सहयोग करते हैं। इसलिए इससे जो उत्पादन होता है, उसे इन सबमें पाश्रिमिक, वेतन, ब्याज, लगान आदि के रूप में वितरित करना होता है। मुद्रा के अभाव में ऐसे उत्पादनों को बाँटना सदैव संभव नहीं होता, विशेष रूप से अविभाज्य वस्तुओं को, यथा-संयंत्र। मुद्रा की सहायता से हम ऐसी समस्या का समाधान कर सकते हैं।

***(ii)* साख प्रणाली का आधार**–वर्तमान अर्थव्यवस्था साख अर्थात् भुगतान करने के वचन पर आधारित है। वर्तमान मुद्रा (सिक्के, पत्र मुद्रा, चेक, बैंक ड्राफ्ट आदि) भी स्वयं भुगतान करने के वचन के अलावा कुछ नहीं हैं। फिर भी यह मुद्रा बैंकों को साख-निर्माण की प्रक्रिया के माध्यम से और अधिक मुद्रा का निर्माण करने में मदद करती है। बैंक यह कार्य नगद निक्षेपों की मदद से गौण निक्षेपों का विस्तार करके करते हैं। इस प्रकार मुद्रा बैंक द्वारा साख निर्माण के आधार की तरह कार्य करती है।

***(iii)* उपयोगिता व लाभों को अधिकतम करने में सहायक**–उपभोक्ताओं को अपनी संतुष्टि को अधिकतम करने में मुद्रा सहायता करती है। उपभोक्ता, मुद्रा को विभिन्न वस्तुओं पर इस प्रकार बाँटकर कि प्रत्येक वस्तु पर किये गये व्यय की प्रति रुपया

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com